प्रातः क्लास 22/12/68 ओमशान्ति पिताश्री शिवबाबा याद है?
यह तो सभी बच्चों को निश्चय होगा हम आत्माओं को परमात्मा पढ़ाते हैं। क्योंकि 5000 वर्ष बाद एक ही बार बेहद का बाप आकर बेहद के बच्चों को पढ़ाते हैं। कोई नया आदमी यह बात सुने तो समझ न सके। रूहानी बाप, रूहानी बच्चे क्या होते हैं यह भी समझ नहीं सकेंगे। तुम बच्चे जानते हो हम सभी ब्रदर्स हैं। वह हमारा बाप भी है, टीचर भी है, सुप्रीम गुरु भी है। तुम बच्चों को यह जरूर ऑटोमैटेकली याद रहता होगा। यहां बैठे समझते होंगे सभी आत्माओं का एक ही रूहानी बाप है। सभी आत्माएँ उनको याद करती हैं। कोई भी धर्म का हो सभी मनुष्य मात्र याद जरूर करते हैं। बाप ने समझाया है आत्मा तो सभी में है ना। अभी बाप कहते हैं देह के सभी धर्म छोड़ अपन को आत्मा समझो। अभी तुम आत्मा यहां पार्ट बजा रहे हो। कैसा पार्ट बजाते हो वह भी समझाया गया है। बच्चे भी नम्बरवार पुरूषार्थ अनुसार समझते हैं। तुम राजयोगी हो ना। पढ़ने वाले सभी योगी ही होते हैं। पढ़ाने वाले टीचर साथ योग जरूर रखना पड़ता है। एमऑबजेक्ट का भी मालूम पड़ता है। इस अवस्था से हम फलाना बनेंगे। यह पढ़ाई तो एक ही है। इनको कहा जाता है राजाओं का भी राजा बनने की पढ़ाई। राजयोग है ना। राजाई प्राप्त करने लिये बाप से योग अर्थात् कोई मनुष्य यह राजयोग कब सिखला न सके। तुमको कोई मनुष्य नहीं सिखलाते। परमात्मा तुम आत्माओं को सिखलाते हैं। तुम फिर औरों को सिखलाते हो। यह याद न रहने से जौहर नहीं भरता है। इसलिए बहुतों की बुद्धि में नहीं बैठता है। इसलिये बाप हमेशा कहते हैं योग युक्त हो। याद की यात्रा में रह समझाओ। हम भाई–2 को सिखलाते हैं। तुम भी आत्मा हो। वह सभी का बाप, टीचर, गुरु है। आत्मा को देखना है। भल गायन है सेकण्ड में जीवनमुक्ति; परन्तु इसमें मेहनत बहुत है। तुम आत्माअभिमानी न बनने से तुम्हारी वचनों में ताकत नहीं रहती। क्योंकि जिस प्रकार बाप समझाते हैं उस रीत कोई समझाते नहीं हैं। कोई2 तो बहुत अच्छा समझाते हैं जैसे दिल्ली में गीता है गोपाल की। वह बहुत अच्छी समझदार है। बहुत पुरूषार्थ करती है हम अपन को आत्मा समझ दूसरों को समझावें। हर्ष रखते हैं देहीअभिमानी होने की और दिल बिल्कुल साफ है। कोई दिल अन्दर खराब नहीं है। आत्मा में खराबियाँ तो ढेर हैं ना। इसलिये काँटा कहा जाता है। कौन काँटा है, कौन फिर फूल है मालूम तो सभी पड़ता है ना। स्कूल में बच्चे 5/6 दर्जा पढ़कर फिर ट्रान्सफर होते हैं। अच्छे2 बच्चे जब ट्रान्सफर होते हैं तो दूसरे क्लास के टीचर को भी झट मालूम पड़ता है। यह बच्चे तीखे पुरूषार्थी हैं। इन्होंने अच्छा पढ़ा है तब ऊँच नम्बर में आये हैं। टीचर तो जरूर समझते होंगे ना। वह है लौकिक पढ़ाई। यहां तो वह बात नहीं। यह है पारलौकिक पढ़ाई। यहां तो ऐसे नहीं कहेंगे यह बहुत अच्छा पढ़कर आये हैं। तब अच्छा पढ़ते हैं। नहीं। उस इम्तहान में ट्रान्सफर होते हैं तो टीचर समझेंगे इसने पढ़ाई में मेहनत की हुई है। तब आगे नम्बर लिया है। यहां तो है नई पढ़ाई। कोई की पढ़ी हुई नहीं है। नई पढ़ाई है, नया पढ़ाने वाला है। सभी नई है। नयों को भी पढ़ाते हैं उनमें जो अच्छा पढ़ते हैं तो कहेंगे यह अच्छा पुरूषार्थी है। य(ह) है नई दुनिया के लिये नई नॉलेज और कोई पढ़ाने वाला तो है नहीं। जितना2 जो अटेन्शन देते हैं उतना ..... पद ऊँच नम्बर में चले जाते हैं। कोई तो बहुत मीठे आज्ञाकारी होते हैं। देखने से ही पता पड़ता है ..... पढ़ाने वाला बहुत अच्छा है। इनमें कोई अवगुण नहीं है। चलन से बात करने से मालूम पड़ता है। यह (बाबा) पूछते भी सभी से हैं यह कैसा पढ़ाते हैं? इनमें कोई खराबी तो नहीं है? अपन को सेठानी समझ तो नहीं ..... हैं? ऐसे भी बहुत कहते हैं हमारे पूछे बिगर समाचार कब न लिखना। बाबा पूछते तो हैं ना टीचर कैसा ...। अच्छा टीचर है या कैसा है। कौन पढ़ाते हैं अच्छा। कोई तेज बुद्धि वाली नहीं होती है, तो माया का ... वार होता है। यह बात जानते हैं माया उन्हों को धोखा बहुत देती है। भल 10 वर्ष ..... भी हैं; परन्तु (माया) ऐसी जबरदस्त है देहअहंकार आया और यह फंसा। बाप समझाते हैं जो भी पहलवान हैं उन पर माया ... अच्छी ...ट लगती है। माया भी बलवान से बलवान होकर लड़ती है। तुम समझते होंगे बाबा ने जिसमें

– – – – – – – – – – – – प्रवेश किया है यह है नम्बरवन। फिर नम्बरवार तो बहुत ही हैं ना। जैसे बाबा ने मिसाल दिया गीता का। गोपाल भी कहते हैं गीता में ज्ञान बहुत है। हम तो कुछ नहीं हैं। अभी सर्विस तो बहुत करता है। निमंत्रण देकर ले आना, बहुत मेहनत करता है, सर्विस के लिये फथकता रहता है। तो भी लिखते हैं बाबा हम तो कुछ नहीं जानते हैं। हम याद में नहीं रहते। बाबा को भूल जाते हैं। बिज़ी बहुत रहते हैं। भागना–दौड़ना, तन–मन–धन सभी लगाना, बस। यज्ञ की सर्विस हो सारा दिन बुद्धि में यह रहता है। फिर लिखता है मैं तो इतना सर्विस नहीं करता हूँ। गीता बहुत होशियार है। है बच्ची बड़ी मीठी। बाबा हमेशा कहते हैं "गीता तो सच्ची गीता है"। वह तो जड़ गीता है। उनमें भी काँटे तो बहुत ही हैं ना। थोड़े बहुत फूल अर्थापायन्ट्स हैं। बाकी तो काँटे ही काँटे हैं। पहला नम्बर काँटा लिख दिया है कि कृष्ण भगवानुवाच। कुछ फूल भी हैं। जैसे कहते हैं बच्चों, मैं तुमको राजाओं का राजा बनाता हूँ। यह भी तुम अभी समझते हो। आगे नहीं समझते थे। भगवान ने काँटों को ही फूल बनाया था; परन्तु टाइम बहुत लम्बा बता देते हैं। इसलिए कोई की बुद्धि में बैठता ही नहीं। समझते ही नहीं भगवान ने कैसे राजयोग सिखाया था। बरोबर सतयुग था तो एक ही धर्म था। कल की बात है। बाप कहते हैं कल तुमको इतना साहुकार बनाया, तुम पदमापदम भाग्यशाली थे, अभी तुम क्या बन गये हो। तुम फील करते हो ना। उन गीता सुनाने वालों से कोई को फीलिंग आती है क्या। ज़रा भी नहीं समझते। बिल्कुल जैसे बन्दरों के आगे पुस्तक रखते हैं। ऊँच ते ऊँच श्रीमतभगवद्गीता ही गाई जाती है। वह तो गीता किताब बैठ पढ़ते वा सुनाते हैं। बाप तो किताब आदि नहीं पढ़ते हैं। फर्क तो है ना। उनकी याद की यात्रा तो है नहीं। वह तो नीचे ही गिरते आते हैं। इसलिए तुम लिखते हो झूठी गीता बोरे और समझाई हुई सच्ची गीता तारे। सर्वव्यापी के ज्ञान से देखो सभी कैसे बन गये हैं। तुम जानते हो कल्प2 ऐसे ही होगा। बाप कहते हैं हम तुमको सिखलाकर इस विषय सागर से पार कर देते हैं। वह झूठी गीता सुनाकर डुबोते हैं। कितना फर्क है। शास्त्र पढ़ना तो भक्ति मार्ग हुआ ना। बाप कहते हैं यह पढ़ने से मेरे से कोई नहीं मिलते हैं। वह समझते हैं कोई तरफ से जाकर पहुँचना है। कब कहते हैं भगवान किस न किस रूप में आकर पढ़ावेंगे। जब बाप को आकर पढ़ाना है तो फिर तुम क्या पढ़ाते हो। तो बाप समझाते हैं गीता में भी काँटे बहुत हैं। आटे में लून मिसल कोई राइट अक्षर हैं। जिसमें तुम पकड़ सकते हो। सतयुग में तो कोई शास्त्र आदि होते ही नहीं। यह है ही भक्ति मार्ग के शास्त्र। ऐसे नहीं कहेंगे यह अनादि है। शुरू से चले आते हैं। नहीं। अनादि का अर्थ नहीं समझते हैं। बाप समझाते हैं यह ड्रामा अनादि तो बरोबर है तुमको बाप राजयोग सिखलाते हैं। बाप कहते हैं अभी तुमको सिखलाता हूँ। फिर यह गुम हो जाता है। तुम कहेंगे हमारा राज्य अनादि था। राज्य वही है सिर्फ़ पावन बदली पतित होने से नाम बदल जाता है। देवता के बदली हिन्दू कहलाते हैं। है तो आदि सनातन देवी–देवता धर्म की ना। जैसे दूसरे सतोप्रधान से सतो. रजो. तमो. में आते हैं तुम भी ऐसे उतरते हो। रजो. में आते हो तो अपवित्रता कारण देवता के बदली हिन्दू कहलाते हो। नहीं तो हिन्दू हिन्दुस्तान का नाम है। तुम असल तो देवी–देवता थे ना। देवताएँ सदैव पावन ही होते हैं। अभी तो मनुष्य पतित बन गये हैं। तो नाम भी हिन्दू रखा है। पूछो, हिन्दू धर्म कब, किसने रचा? बता न सकेंगे। यह तो सभी जानते हैं आदि सनातन एक ही देवी–देवता धर्म था। जिसको पैराडाइज़ आदि बहुत अच्छे–2 नाम देते हैं। जो पास्ट हुआ वह फिर रिपीट करना है। इस समय तुम शुरू से लेकर अन्त तक सभी जानते हो। जानते जावेंगे जो जीते रहेंगे। कई तो मर भी जाते हैं। माया के मरे हुये पहले ही हैं। फिर बाप का बनते हैं तो माया की युद्ध चलती है। युद्ध होने से ट्रेटर बन पड़ते हैं। रावण के थे, राम के बने फिर रावण राम के बच्चों पर जीत पहन अपने तरफ़ ले जाती है। कोई बीमार हो पड़ते हैं फिर न यहां के रहते हैं न वहां के रहते हैं। न खुशी है न दुःख। बीच में रहे पड़े हैं या मरेंगे या जीयेंगे। तुम्हारे पास भी बहुत हैं जो बीच में हैं। बाप का भी पूरा नहीं बनते

हैं, रावण का भी पूरा नहीं बनते हैं। अभी तुम हो पुरूषोत्तम संगम युग पर। उत्तम पुरूष बनने लिये पुरूषार्थ कर रहे हैं। यह बड़ी समझने की बातें हैं। बाबा पूछते हैं हाथ तो बहुत बच्चे उठाते हैं; परन्तु समझा जाता है बुद्धिहीन हैं। भल बाबा कहते हैं शुभ बोलो; परन्तु सुधरना असम्भव है। कहते तो सभी हैं हम नर से ना॰ बनेंगे। कथा ही नर से ना॰ बनने की है। अज्ञानकाल में भी सत्य ना॰ की कथा सुनते हैं ना। वहां तो कोई पूछ नहीं सकते। यह तो बाप ही पूछते हैं तुम क्या समझते हो इतनी हिम्मत है? कोई को भी समझा सकते हो। पावन भी जरूर बनना है। कोई भी आते हैं तो पूछा जाता है इस जन्म में कोई पाप–कर्म तो नहीं किया है। जन्म–जन्मान्तर के पाप तो हैं ही। इस जन्म के पाप बता दो तो हल्के हो जावेंगे। नहीं तो दिल अन्दर खाता रहेगा। सच्च बतलाने से हल्के हो जावेंगे। बहुत अच्छे2 ईवन महारथी भी सच्च नहीं बतलाते हैं। माया एकदम जोर से गुस्सा(घूसा) लगाती है। तुम्हारी बहुत कड़ी बॉकसिंग है। अभी उस बॉकसिंग में तो शरीर को चोट लगता है। इसमें बुद्धि की बहुत चोट लगती है। यह बाबा भी जानते हैं। यह कहते हैं मैं बहुत जन्मों के अन्त का हूँ। सभी से पावन था अभी सभी से पतित हूँ। फिर पावन बनता हूँ। ऐसे तो नहीं कहता हूँ मैं कोई साधु–सन्त, महात्मा हूँ। बाप भी खातरी देते हैं यह सभी से जास्ती पतित है। बाप है नालेजफुल। रावण के राज्य में यह सबसे जास्ती पतित है। बाप कहते हैं मैं पराये देश, पराये शरीर में आता हूँ। यह दादा भी कहते हैं मेरा ऑक्युपेशन तो बाप सभी को बताते हैं कि मैं बहुत जन्मों के अन्त के भी अन्त में प्रवेश करता हूँ। जिसने पूरे 84 जन्म लिये हैं। अभी फिर पावन बनने पुरूषार्थ करते हैं। खबरदार भी बहुत रहना होता है। बाप तो जानते हैं ना। यह बाबा का बच्चा बहुत नजदीक है। यह तो बाप से कब जुदा नहीं हो सकता। ख्याल भी नहीं आ सकता कि छोड़ कर जाऊँ। एकदम हमारे बाजू में बैठा है। मेरा तो बाबा है ना। मेरे घर में बैठा है। बाबा जानते हैं हँसी–कुड्डी भी करते हैं बाबा आज हमको स्नान तो कराओ, भोजन तो खिलाओ, मैं आपका एक छोटा बच्चा हूँ ना। बहुत प्रकार से बाबा को याद करता हूँ। तुम बच्चों को भी समझाता हूँ ऐसे2 याद करो। बाबा आप तो बहुत मीठा हो। एकदम हमको विश्व का मालिक बना देते हो। यह बात और किसकी बुद्धि में हो न सके। बाप सभी को रिफ्रेश करते रहते हैं। सभी पुरूषार्थ करने लग पड़ते हैं; परन्तु चलन भी ऐसी हो ना। भूल हो जाय तो झट लिखना चाहिए बाबा हम से यह भूल हो जाती है। कोई–2 लिखते भी हैं बाबा हमसे यह भूल हुई माफ करना। हमारा बच्चा बन भूल करने से सौणा मल्टीफिकेशन होती है। माया से हराते हैं तो फिर वही के वही बन जाते हैं। बहुत हराते हैं। यह बड़ी बॉकसिंग है। राम और रावण की लड़ाई है। दिखाते भी हैं बन्दर सेना ली..... यह सभी खेल बच्चों को बना हुआ है। जैसे छोटे बच्चे बेसमझ होते हैं ना। बाबा भी कहते हैं यह तो उन्हों की पाई पैसे की बुद्धि है। कहते हैं हरेक ईश्वर के रूप हैं। तुम हरेक ईश्वर बन क्रियेट भी करते हैं, पालना भी करते हैं, फिर विनाश भी कर देते हैं। ईश्वर का कोई काम विनाश करना थोड़े ही है। यह तो कितनी मूर्खता है। इसलिये कहा जाता है गुड्डियों की पूजा करते हैं। वन्डर है। मनुष्यों की बुद्धि क्या हो जाती है। कितना खर्चा करते हैं। बाप डोरापा देते हैं हम तुमको इतना बड़ा बनाकर गया तुमने यह क्या किया। तुम भी जानते हो हम सो देवता थे फिर चक्र लगाते अभी हम ब्राह्मण बने हैं फिर हम सो देवता, सो क्षत्रिय, सो वैश्य शूद्र बने हैं। यह तो बुद्धि में बैठा हुआ है ना। यहां बैठे हो तो बुद्धि में यह नालेज होनी चाहिए। बाप भी नालेजफुल है ना। रहते भी शान्तिधाम में हैं। फिर उनको नालेजफुल कहा जाता है। तुम्हारी भी आत्मा में सारी नालेज रहती है ना। कहते हैं इ(स) ज्ञान से तो हमारी आँख खुल गई है। बाप तुमको ज्ञान की चक्षु देते हैं। आत्मा को सृष्टि के आदि–मध्य–अन्त का पता पड़ गया। यह चक्र फिरता ही रहता है। ब्राह्मणों को ही स्वदर्शनचक्र मिलता है। देवताओं को पढ़ाने वाला तो कोई होता ही नहीं। उनको शिक्षा की भी दरकार नहीं। पढ़ना तो तुमको है। जो फिर तुम देवता बनते हो; परन्तु यह अलंकार देवताओं

को दी है। अभी बाप बैठकर यह नई नई बातें सुनाते हैं। यह नई पढ़ाई पढ़कर तुम ऊँच बनते हो। फर्स्ट सो लास्ट। लास्ट सो फास्ट। यह पढ़ाई है ना। अभी तुम समझते हो बाबा हर कल्प पतित से पावन बनाते हैं। फिर यह नालेज खलास हो जावेगी। तुम सिद्ध कर बतलाते हो झूठी गीता और सच्ची गीता। तो मनुष्य मुँझते हैं। सारा मदार है (पढ़ाई) पर। तुम कहते हो बाप ने हमको जो समझाया है वह हम आपको समझाते हैं। विद्वानों पंडितों से ही तुम्हारी लड़ाई है। तुम जीत पा लो फिर तो सभी की आँखें खुल जावेंगी। झट गद्दी से ही उतार देवें। कहेंगे इनको जादू लगा है यह हुआ है। आगे चल तुम बहुतों को ज्ञान देंगे। तुम्हारी शक्तिसेना बहुत बड़ी हो जावेंगी। तब तुम्हारा प्रभाव निकलेगा। यहां हाहाकार हो जावेगा। निराकार पढ़ाते हैं यह कोई जानते हैं? कहेंगे वह नाम–रूप से न्यारा है। वह कैसे पढ़ावेंगे। तुम तो जैसे कोई चर्ये हो। तुम फिर कहते हो वह महा चर्ये हैं। एक तरफ़ कहते भी हैं हम सभी ब्रदर्स हैं, बाप को याद भी करते हैं, फिर कहना कि नाम–रूप से न्यारा है, हो कैसे सकता। आत्मा का भी नाम तो है ना। तो यह सभी बाप आकर तुमको समझाते हैं। तुम अभी समझते हो इन भक्ति मार्ग के शास्त्रों ने तुमको डुबोया है। अभी फिर बाप सच्ची गीता सुनाकर पार करते हैं। इसमें कोई दुश्मनी की बात नहीं। यह ड्रामा है। बाप पार कर शिवालय में ले जाते हैं फिर वेश्यालय में कौन डुबोते हैं? यह माया 5 विकार। यह बाप ही समझाते हैं–बाबा कोई से सीखे नहीं हैं। वह तो है ही नालेजफुल। ज्ञान का सागर, सुख का सागर, महिमा गाते हैं; परन्तु समझते कुछ भी नहीं हैं। ज्ञान का सागर कैसे है, क्या ज्ञान सुनाते हैं, वह पता न होने कारण पानी के सागर को, नदियों को मान लेते हैं। तो जट कहेंगे ना। यह भी एक अक्षर है। ड्रामा बना हुआ है। यह कब मिट नहीं सकता। कितना बड़ा भारी खेल है बना–बनाया। दूसरी कोई बात हो नहीं सकती। क्या पड़ी थी जो यह खेल बना यह प्रश्न नहीं उठ सकता। कहते हैं बाप को क्या मजा आता..... अरे, यह तो अनादि खेल है। इनको समझने का है। समझने से बड़ी खुशी होती है। अति ईन्द्रिय सुख मिल जाता है। तुमको खुशी होती है ना भविष्य में हम ना0 बनेंगे। पहले तो जरूर प्रिन्स बनेंगे ना। यह है ही बेगर से प्रिन्स बनने का। बेगर में सभी आ जाते हैं। प्रिन्स कहने से ही कृष्ण याद आवेगा। अगर कृष्ण बैठ यह ज्ञान सुनावे तो उनको कोई छोड़े ही नहीं। अभी तुम कितना नालेजफुल बनते हो। तो इसमें पूरा ध्यान देना चाहिए ना। माया भी बीच में बड़ी विघ्न डालती है। इसमें सच्चाई सफाई बहुत चाहिए। इन ल0ना0 में कितनी सच्चाई सफाई है। इनको ही देखकर कितना खुश होना चाहिए। पहले हम यह बनेंगे। बाबा हमारा बाप भी है, टीचर भी है, गुरु भी है। हमको पढ़ाते हैं, शिक्षा देते हैं मन्मनाभव। राजाओं का राजा बनाने लिये पढ़ाते हैं। अक्षर ही दो तीन हैं। बीच में है यह (साकार) है इसलिये बच्चों को मुँझ होती है; परन्तु इनके लिये वह समझावे कैसे। शरीर धारण करने बिगर इतना सुख का वरसा कैसे देंगे। तुम जानते हो हमको यह बनना है; परन्तु फिर भी माया एकदम भुला देती है। अच्छा, मीठे रूहानी बच्चों को रूहानी बाप दादा का यादप्यार, गुडमॉर्निंग और नमस्ते।

प्वाइन्ट्स :– आगे कन्याओं की जब शादी होती थी, तो पहले बनवा में बिठाते थे और सफेद फटी हुई कपड़े पहनते थे। रंगीन भी नहीं। यह तुम बच्चों के लिये भी यह वनवास है। यहां क्या पहनना है। वहां चलकर भी पहनेंगे। यहां अच्छे2 कपड़े पहनने से वहां का सुख कम हो जावेगा। देहअभिमान को तोड़ना है। बच्चों को (अप)नी बहुत सम्भाल रखना है। अपन को देखना है हमारे से किसको दुःख तो नहीं हुआ। बाप तो है ही दुःख (हर्ता) सुख कर्ता। बाप कहते हैं कब दुःख न देना। याद में रहने से सभी दुःख दूर हो जावेंगे। इन ल0ना0कृ0 ..... चित्र देखने से भी बड़ी खुशी होगी। बाप हमको ऐसा बनाते हैं। बाबा को याद आता है हम यह बनूँगा। ..... का सा0 बहुतों को होता है। ओम।

.... सेन्टर का एड्रेस यह है:– ब्रह्मा कुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय

.....